क्रोध जूवा मान लालच मांस मद्रा बेश्वा ॥
ऐसी बातों का त्याग बताया हमें ॥ ३ ॥
आत्मा परमात्मा में कर्म ही का भेद है ॥
काट दे गर कर्म तो कुछ खेद है ना भेद है ।
बनकर ईश्वर आप दिखाया हमें ॥ ४ ॥
सच्चिदानंद रूप हूं उंसर कोई मुझमें नहीं ।
न्यायमत फिर कौनसा वस्फे खुदा मुझमें नहीं ।
तूने जल्वा हक़ीक़त दिखाया हमें ॥ ५ ॥

२

श्रीभगवान महावीर स्वामी की स्तुति ।

(चाल नाटक) बूए हर गुलमें परवरदिगार है ।

तेरी महिमा यह सबसे महान है—हां ।
ज़र्रे ज़र्रे का भी तुझको ज्ञान है—हां ॥ टेक ॥
ले हितंकरका अवतार आया यहां ।
तूने देखा कि है दुखमें सारा जहां ।
दुखी हर एक इन्सां हैवान है—हां ॥ १ ॥
तूने मुक्ती का मारग दिखाया हमें ।
सुख शान्ती का रस्ता बताया हमें ।
सच्चा तुझमें दया का निशान है—हां ॥ २ ॥
दूर हिंसा का ब्यवहार तूने किया ॥
दयामय धर्म परचार तूने किया ॥

तेरा ममनूं ज़मीन आसमान है—हां ॥ ३ ॥
न्यायमत ध्यान ईश्वर लगाया करो ॥
प्रेम भक्ती से गुण उसके गाया करो ॥
वह बिलाशक गुणों का निधान है—हां ॥ ४ ॥

———:o:———

३

श्रीभगवान महावीर स्वामी की स्तुति।

चाल—मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे।

स्वामी सच्चा हितैषी बनादो हमें।
करना पर उपकार सिखादो हमें ॥ टेक ॥
तू हितंकर सर्व दर्शी दुष्करमका बेखंकन[1]।
सब चराचर पर दया का है तुही साएं फ़िगन[2] ॥
सातों तत्वों का राज़ बतादो हमें ॥ १ ॥
है घटा अज्ञान की चारों तरफ छाई हुई।
फूट की गर्मी से कलियां प्रेम मुर्झाई हुई।
प्याला प्रेम दयाका पिलादो हमें ॥ २ ॥
नाव खुदगर्ज़ी के तूफां में है चकराने लगी।
हा मती मल्लाह की भी अब तो बोहराने लगी ॥
बनकर आप खिवय्या लंघा दो हमें ॥ ३ ॥

---

१ जड़से उखाड़ने वाला ॥ २ साया करने वाला ॥ ३ मद।

बीरता दिलमें हो दुखियों की मदद के वास्ते ।
हो दयाका भाव भूकोंकी मदद के वास्ते ।
अर्जुन और करण सा बनादो हमें ॥ ४ ॥
है मोहब्बत सबमें सब नफरत हिक़ारत छोड़ दें ॥
न्यायमत परचार विद्या हो जहालत छोड़ दें ।
स्वामी यह गुरुमंत्र सिखादो हमें ॥ ५ ॥

---:o:---

४

चाल---कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ।

अय दयामय बिश्व में मंगल करन तूही तो था ।
सब चराचर का हितु और दुख हरण तूही तो था । १
थे जो करता के ग़लत मसलों के हामी हर तरफ ॥
उनका नय परमाण से दन्दाशिकन[1] तूही तो था ॥२॥
यज्ञ में चलते थे खंजर बेजुबानों पर सदा ।
सुनने वाला उनका फर्यादी सखुन[2] तूही तो था ॥३॥
खून के बहते थे दरिया रात दिन इस हिन्द में ॥
इस जुलम का और सितम का बेखकँन[3] तूही तो था ४
रहम करता कोई उनपर कौन था किसकी मजाल ।
बस दया का रहमका साँएफिगन[4] तूही तो था ॥ ५ ॥
रागसे और द्वेशसे न्यामत कोई खाली नहीं ।
अय प्रभू इक बीतरागी पुर अमँन[5] तू ही तो था ६ ॥

---

१ मुंह तोड़ उत्तर देना ॥ २ करुणारूपी वचन ॥ ३ जड़ से उखाड़नेवाला ॥
४ साया करने वाला ॥ ५ शान्तमय ।

५

चाल--तौहीद का डंका आलम में बजवा दिया कमलीवाले ने।

जिन धर्मका डंका आलम में बजवा दिया केवल ज्ञानी ने।
करता के मसलेका खंडन कर दिया सार जिनवाणीने १
जब कुंडनपुर में आन लिया अवतार वीर सुखदानी ने।
हिंसा की अगनी शान्त करी महावीर की अमृतवाणीने २
मिथ्यात घटा पाखंड हटा माना हर मतके ज्ञानी ने!
मुख नीचाकर लिया स्यादवाद सुनकर कुरानी पुराणी ने ३
अंगीकार किया जिनमत सुन इन्द्रभूत अभिमानी ने॥
शरण वीर ली पात्रकेश्री सब वेदों के ज्ञानीने॥ ४॥
सिक्का मान लिया जिनमतका चीन और जापानीने।
तिब्बत स्याम अनाम और ब्रह्मा नेपाल हिन्दोस्तानीने ५
न्यामत कुफर हुवा गारत मूढ ढक लिया कुतब अस्मानीने।
शीस झुकाया जैन न्याय आगे षटमत शर्धानी ने।

———:o:———

६

जिनेन्द्र भगवान की स्तुति।

जय जिनेन्द्र हितकार नमस्ते। दुखहारी सुखकार नमस्ते॥
जय शिवमगनेतार नमस्ते। करम अचल भेतार नमस्ते १
पाप ताप हरतार नमस्ते। जग शान्ती कर्तार नमस्ते॥
विश्वतत्व ज्ञातार नमस्ते। लोकालोक निहार नमस्ते २

१ पीछे श्रीविद्यानन्द स्वामी नाम रक्खा।

बिसिष्ट शिष्टाचार नमस्ते । शान्त सरूपाकार नमस्ते ॥
दया धरम परचार नमस्ते । बिश्वहितंकर सार नमस्ते ३
ज्ञान अनंता धार नमस्ते । महिमा अपरमपार नमस्ते ॥
भव्य भवोदधि तार नमस्ते । पतित जीव उद्धार नमस्ते ४
अष्ट करम संघार नमस्ते । शिवरमणी भरतार नमस्ते ॥
तिर्थंकर अवतार नमस्ते । तीन भवन में सार नमस्ते ५
मोह बिमोचनहार नमस्ते । बिषय कषाय निवार नमस्ते ॥
पावन परम अबिकार नमस्ते । शिवसरूप शिवकार नमस्ते ६
महादान दातार नमस्ते । शर्मामृत सितसार नमस्ते ॥
जय रत्न त्रय धार नमस्ते । पूरण ब्रह्म अबिकार नमस्ते ७
निराकार साकार नमस्ते । एकानेक आधार नमस्ते ॥
तीनलोक शृंगार नमस्ते । भुक्ति मुक्ति दातार नमस्ते ८
सत्य धरम परचार नमस्ते । मिथ्या तिमर निवार नमस्ते ॥
न्यामत बारम्बार नमस्ते । कर जिन चरण मंझार नमस्ते ९

७

(चाल) सोरठिया प्यारी बोलोजी भरने दे जल नीर ।

टुक अरज हमारी सुनियो जी स्वामीजी महाबीर ॥ टेक ॥
तुम हो प्रभू जग हितकारी ।
तुमहो सबके सुखकारी ।
तुम पर दुखहारी काटोजी करमन की जंजीर ॥ १ ॥
यह कर्म महा अन्याई ।
हैं भवभव में दुखदाई ।

नहीं जगमें कोई सहाईजी तुम आन बंधाओ धीर ॥ २ ॥
अब शिव मारग दर्शा दो।
मोहे सीधे घाट लगादो ।
न्यामत का भरम मिटादोजी जो हटे करम की पीर ॥ ३ ॥

———:o:———

८

चाल-दोहा।

शिव कारण सब सुख करन, सम्यक दर्शन रूप।
विघन हरण मंगल करन, पावन शुद्ध सरूप ॥ १ ॥
सम्यक दर्शन ज्ञान युत, शुद्धातम सुखकार।
जग भूषण दूषण रहित, सब जीवन हितकार ॥ २ ॥
निजानन्द रस लीन नित्य, वीतराग भगवान।
शिवमारग दर्शाय के, किया जगत कल्याण ॥ ३ ॥
भरम हरण निर्भय करन, जगनायक जगभान
वंदूं जग चूड़ामणी, जिन पारश भगवान ॥ ४ ॥

———:o:———

९

चाल-(लावनी)

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर सब जग जीवन सुखकारी।
ज्ञान प्रकाशक तिमर विनाशक तु दुखहारी हितकारी ॥ १ ॥
तीन भवन में रतन अमोलक विद्या तुमने सिखलाई।
चौदा विद्याकला बहत्तर जो दुनिया में सुखदाई ॥ २ ॥
स्यादवाद और नय प्रमाण से मिथ्या मतका नाश किया।

तत्वोंका उपदेश सुना जगमें सतका पर्काश किया ॥ ३ ॥
दूर हटाकर आलश को पुरुषारथ करना वतलाया ॥
मैत्रि प्रेम दया सबही जीवन पर करना सिखलाया ॥ ४ ॥
है यह जीव स्वतंत्र अनादि जब खुद को लख पाता है ।
करम काटकरके आतम से परमातम बन जाता है ॥ ५ ॥
है तूही सत हित उपदेशी सत्य सदा तेरी वाणी ।
न्यामत महिमा देख आपकी बन गया सम्यक श्रद्धानी ६ ॥

———:o:———

२—अध्यातम (वहदानियत)

———:o:———

१०

(चाल) खुदाया कैसे मुसीबतों में यह ताज वाले पड़े हुए हैं ।

खुदा को ढूंडा कहीं कहीं पर खुदा को लेकिन कहीं न पाया ॥
जो खूब देखा तो यार आखिर खुदा को हमने यहीं पे पाया १॥
न मसजिदों में न मंदिरों में समंदरों में न कंदरों में ॥
छुपा हुवा था हमारे अंदर हमीं ने ढूंडा हमीं ने पाया ॥ २ ॥
अरब में कहते हैं रूह जिसको उसीको आतम यह हिंदवाले ॥
जिनेन्द्र ईश्वर है गोड वह ही फरक ज़रा भी कहीं न पाया३ ॥
मतों के धोके में आके यूंही जगत में लड़लड़ के मर रहे हैं ।
भरमका परदा हटा के देखा तो एक नक़शा सभी में पाया ४॥
है सच्चिदानन्द रूप जिसका है ज्ञान दर्शन सरूप जिसका ।
वही तो तू है विचार न्यामत कि जिसने ढूंडा उसी ने पाया ॥

११

चाल-सब्र पड़ जायगा एक दिन बुलबुले नाशाद का।

आपही अपने में हमने अपनी सूरत देखली।
इस अमूरत की जो सूरत है वह सूरत देखली॥ १॥
अब तलक पर्दा रखा पर्दे में था पर्देनशीन॥
अब नहीं पर्दा रहा पर्दे में सूरत देखली॥ २॥
काट के दानों की माला मुद्दतों फेरा करी॥
छोड़ दी जब अपने गुणमाला की सूरत देखली॥ ३॥
न्यायमत हरवक्त निज आनन्द रसमें लीन हूं॥
कुछ नहीं दुनिया की लज्ज़त सबकी सूरत देखली॥ ४॥

———:o:———

३—उपदेशी भजन।

———:o:———

१२

चाल-किसके खरामे नाज़ने फ़ब्र में दिल छिना लिया।

अय वैशजाती गौरकर किसने तुझे गिरा दिया॥
तेरी खराबियों ने है नीचा तुझे बना दिया॥ १॥
हो बदरसूमका बुरा जिसने हमें तबाह किया॥
खुद गर्जियों ने देखले है खाक में मिला दिया॥ २॥
बच्चे यतीम आपके मारे फिरें हैं दरबदर।

घटती है कौम दिन ब दिन है बल तेरा घटा दिया ॥ ३ ॥
औरों को देख किस तरह आगे क़दम बढ़ा रहे ।
विद्या में धन में धर्म में पीछे तुझे हटा दिया ॥ ४ ॥
तेरी तबाहियों का ही सुनते हैं ज़िक्र जाबजा
तेरी ही गफ़लतों ने है बुज़दिल तुझे बना दिया ॥ ५ ॥
गर उन्नति चाहे तो चल संसार की रफ़तार पे
न्यामत ने राज़ खोलकर सारा तुझे सुना दिया ॥ ६ ॥

१३

चाल--प्रभू भक्ती में प्रेम लगा रे मना ॥

प्रेम भक्ती सभी को सिखाते चलो ।
सबकी सेवा में सरको झुकाते चलो ॥ टेक ॥
माने न माने कोई उनकी मर्ज़ी ।
तुम अपनी तरफ़ से मनाते चलो ॥ १ ॥
कुरीति में दौलत लुटी जा रही है ।
बचा तुम सको तो बचाते चलो ॥ २ ॥
जुलम का सितम का बुरा है नतीजा ।
दया में कदम को बढाते चलो ॥ ३ ॥
है बिगड़ी हुई बेश जाती की हालत ।
जो तुमसे बने सो बनाते चलो ॥ ४ ॥
आपस के झगड़े घरों की लड़ाई ।

१ कम हिम्मत २ मामला

सुलह उनकी हो तो कराते चलो !! ५ ॥
कीजे मदद कुछ यतीमों की भाई ॥
जो मरते हैं भूके बचाते चलो ॥ ६ ॥
कीनां हसंद खुदगर्जी की आदत ॥
जहां तक बने सो घटाते चलो ॥ ७ ॥
सुनाकर धरम सबको धर्मी बनाओ।
पापों से दामन बचाते चलो ॥ ८ ॥
झूटे खयालों को दिलसे हटाओ।
सत्य बातों के हामी बनाते चलो ॥ ९ ॥
न्यामत घर घर विद्या फैला दो।
जहालत को जड़से मिटाते चलो ॥ १० ॥

१४

चाल-कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं।

(नीचे लिखे ९ बल यथा शक्ति प्रत्येक नर नारी को प्राप्त करने चाहियें)

उन्नति चाहो तो बल विद्या का हासिल कीजिये।
इसके आगे और बल निर्बल हैं सब सुन लीजिये १ ॥
रूप तप परिवार धन बल धर्म बल और मित्र बल।
राज बल काया का बल नव बल हैं निश्चय कीजिये ॥ २ ॥
होके निर्बल न्यायमत जग में कभी रहना नहीं।
इसलिये कोई तो बल अपने में पैदा कीजिये ॥ ३ ॥

---

१ शेर २ जलन।

१५

(चाल पंजाबी) अड़ गई अड़ गई हो हो जिंदड़ी अड़ गई नाल कृष्ण के।

फिर गई फिर गई हो हो, पछवा फिर गई देख जगत में ॥टेक॥
द्वेष करे भाई से भाई—बात बात में करे लड़ाई ॥
झूट कपट जाने चतुराई—फूट अटरिया चढ़ गई हो।
पछवा फिर गई देख जगत में ॥ फिर गई० ॥ १ ॥
कलयुग खोटा पहरा आया-क्रोध लोभ हृदय में छाया।
हिंसा करम सभी मन भाया-नाव भमरिया पड़ गई हो।
पछवा फिर गई देख जगत में॥ फिर गई० ॥ २ ॥
विद्या हीन भए नर नारी-बन गए सारे पापाचारी।
कौन करे भाई रखवारी-खेत को चिड़ियां चुग गई हो।
पछवा फिर गई देख जगत में। फिर गई० ॥ ३ ॥
न्यामत दया धरम नहीं जाने-गुरू बचन चेला नहीं माने।
ना कोई पंडित ना कोई स्याने-भांग कूवें में पड़ गई हो।
पछवा फिर गई देख जगत में। फिर गई० ॥ ४ ॥

१६

(चाल) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे।

दिला क्यों रंजोग़म करता है क्यों मरने से डरता है।
वही होता है बस जो कुछ करम इज़हार करता है ॥ १ ॥
करम बलवान है जग में नहीं टारे से टलता है।
यक़ीन करले बिन आई नहीं कोई भी मरता है ॥ २ ॥

अटल है देख लीजे क़ायदा क़ानून कर्मों का ।
ख़ता हरगिज़ नहीं देखो क़ज़ा का तीर करता है ॥ ३ ॥
न्यायमत छोड़ दे संशय करो शर्धान तत्वों का ।
रतन त्रिय धर्म को जानो यही उद्धार करता है ॥ ४ ॥

१७

नोट—यह भजन अपने पुत्र राजकुमार के वास्ते सन् १९२२ में बनाया था और उसने स्कूल में सुनाया था ।

(चाल) पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ।

डीअर क्लास फैलो सुनो मेरी गुफ्तगू ॥
गर ठीक पास होने की है तुमको आर्ज़ू ॥ १ ॥
मत कर ख़राब खेल में तिफ़्लीकी आबे को ॥
खोना न भूल ऐश में अ:हदे शबाबको ॥ २ ॥
तहसील इल्म करना यही अपना काम है ॥
दिनको हमारे वास्ते सोना हराम है ॥ ३ ॥
सीधा व सादा आपका सारा लिबास हो ॥
शय कोई टीपटाप की हरगिज़ न पास हो ॥ ४ ॥
जबतक विद्यार्थी हो ब्रह्मचर्य्य को पालो ॥
हरगिज़ न बुरी बात कोई मूंह से निकालो ॥ ५ ॥
कीजे लिहाज़ मास्टर आली जनाब का ॥
और याद सबक़ कीजिये अपनी किताब का ॥ ६ ॥
न्यामत है इम्तिहान खड़ा सरपे जान लो ॥
हिम्मत से काम कीजिये मुश्किल आसान हो ॥ ७ ॥

---

१ जवानी २ विद्या पढ़ना ३ चीज़

१८

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं।

चाहे गरमी से बरफ इकदम पिघलना छोड़ दे।
चाहे पूरब से कभी सूरज निकलना छोड़ दे॥ १॥
पानी सरदी छोड़ दे और आग गरमी छोड़ दे॥
संग सख्ती छोड़ दे और मोम नरमी छोड़ दे। २।
चाहे बुलबुल बाग में जाकर चहकना छोड़ दे।
चाहे बिजली बादलों में आ चमकना छोड़ दे। ३।
पूर्व में शुक्कर सितारा टिमटिमाना छोड़ दे॥
चाहे उत्तर में धुरू अपना ठिकाना छोड़ दे॥ ४॥
न्यायमत वह है अधम जो प्रण निभाना छोड़ दे॥
मैं नहीं छोडूं धरम चाहे ज़माना छोड़ दे। ५।

———:o:———

४—जीवनधर नाटक संबंधी भजन।

———:o:———

नोट—जीवनधर चरित्र जैन शास्त्र के अनुसार धर्मवीर जीवनधर नाटक तय्यार किया जा रहा है जो शीघ्र ही छपकर प्रकाशित होगा यह भजन इसी नाटक के सम्बन्ध में हैं॥ अर्थात् रानी विजियासुन्दरी (जीवनधर की माता) व मंत्री का राजा सत्यधर को राजनीति समझाना और काष्ठागार (लकड़-हारा) को राज देने से रोकना॥

१९

रानी का राजा को समझाना।

(चाल) खुदाया कैसी मुसीबतों में यह ताजवाले पड़े हुए हैं।

प्रभू से हरदम यही दुआ[1] है कि मुझको प्यारी स्वतंत्रता हो।

१ प्रार्थना।

बला से बन जाऊं वन में पक्षी परन्तु प्यारी स्वतंत्रता हो ॥१॥
जो जीव जल थल आकाश मंडल विहार करते स्वतंत्रता से।
उनही को धन है कि जगमें जिनको सदा ही प्यारी स्वतंत्रता हो
है उनको धिक्कार धनकी खातिर जो खुद पराधीन हो रहे हैं।
नहीं हैं हम राज धनके ख्वाहां यही तमन्ना स्वतंत्रता हो ॥३॥
नहीं है परवाह अगर विधाता बनादे मछली पतंग कुछ भी ॥
बनादे घर चाहे जा नरक में मगर वहां भी स्वतंत्रता हो ॥४॥
सुखोंको भोगूं परतन्त्र होकर नहीं है मंजूर मुझको राजा ॥
चाहे फिरूं वनमें वनके जोगन मगर यह प्यारी स्वतंत्रता हो ५
हो आज खुद मुखतियार राजा हूं मैं भी तुमरी स्वतंत्र रानी।
दिया जो गैरों को राज तुमने तो कहिये कैसे स्वतंत्रता हो ६॥

२०

मंत्री का राजा को समझाना।

(चाल) कहाँ ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है।

महा मूरख कमीने नीच को गुणी जन समझते हो ॥
गजब करते हो जो दुर्जन को तुम सज्जन समझते हो ॥ १ ॥
हलाहल को सुधारस नीम को चन्दन समझते हो।
ढाक के फूल को गुल जेठ को सावन समझते हो ॥ २ ॥
कंस ज़ालिम को तुम श्रीकृश्न नारायण समझते हो ॥
आग को नीर दुःशासन को तुम अर्जुन समझते हो ॥३॥
चोर को शाह छली को संत रजको धन समझते हो।

गधे को अस्व और गीदड़ को पंचानन समझते हो ॥ ४ ॥
दुर्योधन को धरमसुत पीत को कंचन समझते हो ।
ऊंट को फ़ील दशानन को तुम लछमन समझते हो ॥ ५ ॥
आग को नीर समझा है रात को दिन समझते हो ।
काग को हंस नागन को हार चंदन समझते हो ॥ ६ ॥
न्यायमत जो हितैषी है उसे दुशमन समझते हो ॥
दगाबाज़ और कमीने ग़ैर को साजन समझते हो ॥ ७ ॥

२१

मंत्री का राजा को समझाना ।

(चाल) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ।

बना देता है राजा देख बदज़न लोभ सज्जन को ।
सखी धर्मात्मा पंडित मुनीजन को गुणीजन को । १ ।
राजका काम टेढा है बड़ा राजा समझ लीजे ॥
लोभ कर देता है बदज़न न देखे गुणको अवगुण को ॥२॥
लोभ ने कर दिया अंधा देख केकई सी रानी को ।
निकाला उसने बनमें रामको सीता को लछमन को ३ ॥
जलाने के लिये भेजा था दुर्योधन ने मंडप में ।
युधिष्टर को नकुल सहदेव कुंती भीम अर्जुन को ॥ ४ ॥
क़तल कर देता है लोभी पिता को और माता को ।
बहन को भाई को नाती संगाती यार साजन को । ५ ।
विलाशक पाप का है बाप लालच न्यायमत देखो ।
मिटा देता है लोभी लोभ में तन मनको और धनको । ६ ।

२२

रानी विजियासुन्दरी का राजा को राज्य और प्रजा की रक्षा के लिये विषय भोगों को छोड़ने के लिये राजनीति का उपदेश करना।

(चाल) मत्र पड़ें जाएगा एक दिन बुलबुले नाशाद का।

ग्रहन करलो राजनीति के ज़रा पैग़ाम को।
छोड़ दो परजा की खातिर ऐश को आराम को। १।
है प्रजा के दुखमें दुख आराम में आराम है॥
छोड़ दो देखो पती दुनिया के झूटे नाम को। २।
धार्मिक राजा है वह और धर्म का अवतार है॥
धर्म पर चलता है जो तजकर विषय को काम को। ३।
अपने सुख के कारणे छोड़ो नहीं इस राज को॥
सोच तो लीजे ज़रा इस काम के अंजामको॥ ४॥

२३

रानी का राजा को समझाना।

(चाल) खुदा या कैसी मुसीबतों में यह ताज वाले पड़े हुए हैं।

जगत में सुखका उपाय क्या है ज़रा तो सोचो विचार करके॥
किसी ने सुख आज तक न पाया धरम को दिलसे बिसार करके १
विषयों में नुकसान है सरासर जो फ़ायदा है तो है धरम में॥
अगर न मानो तो आज़मालो भरमका चश्मा उतार करके २॥
धर्मार्थ काम और मोक्ष चारों यही तो सुखके निशां बताए॥
इन्हीं को पुरुषार्थ कह रहे हैं ऋषी मुनीजन पुकार करके ३॥
सुखोंका करता यही धरम है दुखों का हरता यही धरम है।

धरम वही है कि फ़र्ज़ अपना अदा करे जो संवार करके ४ ॥
धरम है राजाका राज करना न्याय नीति से कार्य करना ।
गुणीजनों की समाज करना जो कुछ भी करना संभार करके ५
प्रजा को अपनी खुशहाल करना जो दुष्ट हो पायमाल करना ।
देश उन्नति का खयाल करना सुखोंको अपने निसार करके ६
मिले न राहत किसीको न्यामत धरम का मारग विसार करके।
विषों में निशदिन गुज़ार करके या राज अपना विगार करके ७

२४

मंत्री का राजा को समझाना ।

(चाल) सखो सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ।

राजको छोड़ करके सुख नहीं पाया किसी नर ने ॥
न ऐसा करना बतलाया किसी मत के शास्तर ने । १ ।
गँवाई हाथ से सीता कहीं मारे फिरे बनमें ॥
राज को छोड़कर सुख क्या लिया श्रीरामचन्दर ने ॥ २ ॥
पांच पांडव भी जा नोकर बने वैराट राजा के ॥
बनाई द्रोपदी बांदी राज तजकर युधिष्टर ने ॥ ३ ॥
सही लाखों मुसीबत राज तजकर देख लो राजा ॥
सती दमयंती रानी और राजा नल बहादुर ने ॥ ४ ॥
पड़ा सागर चढ़ा शूली हुवा था भेट देवी की ॥
तजा जब राज पद श्रीपाल कोटीभट दिलावर ने ॥ ५ ॥

१ न्योछावर करना ।

रहा भंगी के घर मुरदे जलाए जा मसानों में ॥
बिके रोहतास नारी जब तजा पद हरीश्चन्द्र ने । ६ ।

—————:o:—————

५—ऐतिहासिक भजन ।

—————:o:—————

२५

गौर—सती तिलकासुन्दरी का अपने पापी देवर मधुदत्त को समझाना और शील की महिमा दिखाकर अपने शील को बचाना ।

चाल नाटक—पीहरवा उठो कलेजे पीर ।

दोहा—शील हितैषी जीव का शील गुणों की खान ।
शील कभी नहीं खंडिये जब लग घट में प्राण ॥
परनारी पैनी छुरी शहद लपेटी जान ।
सुखदाई मत जानियो छूवत हर ले प्राण ।
देवरिया कह्यो हमारो मान-हमारा मत कर तू अपमान ।
छोड़ो झगड़या—छांड़ो अँगुरिया ।
मैं हूँ दुधारी कटार । देवरिया कह्यो हमारो मान १
दोहा—और जो तू माने नहीं हा पापी हा नीच ।
प्राण तजूं मैं अपने पड़ूं समन्दर बीच ॥
मैं हूँ सती शिरोमणी जैन धरम मैं लीन ।
तू सूनी मत जानियो अरे अधम अघलीन ॥

देवरिया आवेंगे शासन वीर—हमारी आन बँधावें धीर।
देखो देवरिया—छोड़ो झगड़िया ।
राखूंगी शील सँभार ॥ देवरिया कह्यो हमारो मान ॥ २ ॥

९६

नोट—अक्तूबर सन् १९२४ में देहली के क़रीब दरयाय जमना में सैलाब (पानी की रो) आ गया था जिससे बहुत से गाँव, आदमी व गाय भैंस आदि वह गए थे और लोग बड़ी तकलीफ में थे। हम भी स्वयं इस दुखमई दुर्घटना को देखने के लिये देहली गए थे। बहुत से मनुष्य और पशु जमना में वहते जा रहे थे ॥ जिनमें से कुछ मनुष्य व पशु सेवासमिती के वीरों ने रस्से आदि डाल कर निकाले थे—और देहली के शाही किले के सामने पड़े थे ॥ देहली वालों ने उनके खाने पीने का प्रबन्ध किया हुआ था ॥ उन मनुष्यों पर जो दुख था और जो कुछ वह ज़ुबाने हाल से फरयाद कर रहे थे उसका फोटो इस भजन में खैंच कर दिखाया गया है ॥

चाल—मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ।

कोई जमना किनारे लगा दो हमें ।
ऐसी मोजेफ़ना से बचा दो हमें । टेक ।
हाय क्या जमना में अबके जोश है सैलाब का ।
क्या टिहर्सले[3] है यह परलय की गज़ब गिर्दाब का ।
कोई इतना तो ठीक बता दो हमें । १ ।
बल्लियों पानी चढ़ा पानी में सब कुछ बह गया।
अब तो पुल जमना का भी फुट एक बाकी रह गया।
ऐसी आफ़त से कोई बचा दो हमें २ ॥
कांपता है जी ज़रा इनकी हक़ीक़त देखकर ।
है हरइक मग़मूम[6] दुखियों की मुसीबत देखकर ।
कीजे क्या तदबीर बता दो हमें ३ ॥

---

१ प्रलय की लहर ॥ २ पानी की तेज धारा ॥ ३ आज़माइशी काम ॥ ४ भंवर ५ हाल ६ रंजीदा ।

बस्तियां रस्ते में आई सबकी सब गर्क़ाब हैं।
क्या बशर हैवान सब तूफ़ान में बेताब हैं।
कोई कश्ति लगाकर लंघा दो हमें ॥ ४ ॥
पुल शिकस्ता हो गए और बंद पुश्ते टूटकर।
मिट गए मटिया खिलौनों की तरह सब फूटकर ॥
कोई बल्ली लगाकर बचा दो हमें ॥ ५ ॥
देखलो मँझधार में बेहोश इन्सां जा रहे।
कोई जिन्दा कोई मुर्दा सब परीशां जा रहे।
कोई थाम सके तो थमादो हमें ॥ ६ ॥
भेड़ बकरी का पता किसको भला इस आन में।
गाएँ भैंसों का ठिकाना है नहीं तूफ़ान में ॥
कोई आ करके धीर बँधादो हमें ७॥
वह गई औरत कहीं बच्चे कहीं और खुद कहीं।
माल धन सब वह गया पानी तले घर की ज़मीं।
कोई बिछड़ों को लाके मिला दो हमें ॥ ८ ॥
मुर्दे हिम्मत हैं खड़े खतरे में जां को डालकर।
दे रहे हैं झोलियां दरिया में रस्से डालकर ॥
न्यामत ऐसों के दरश दिखा दो हमें ॥ ९ ॥

---

१ पानी में डूब गई २ मनुष्य ३ पशु ४ पानी का रेला ५ टूट गए ६ मनुष्य ७ धैर्य ८ समय ९ स्वयं १० पृथ्वी ११ बहादुर १२ द्वारा करना।

२७

नोट—सरकार बृटिश की तारीख ११ नोम्बर सन् १९१८ को जर्मन पर विजय हुई-जिसकी खुशी में हिसार में मिस्टर उल्मा लतीफी साहेब डिपटी कमिश्नर बहादुर ने जलसा किया-इस जल्से में यह मुबारकबादी सुनाई गई थी ॥

चाल—अदमसे जानिबे हस्ती तलाशे यार में आए ॥

खुशी का आज यह जलसा मुबारक हो मुबारक हो ।
हिन्द इंग्लैंडको जापानको सबको मुबारक हो १ ॥
हुई है जीत बृटिशकी मुबारक हो मुबारक हो ।
फते है जार्ज पंजम की मुबारक हो मुबारक हो २ ॥
कई बर्षों से आफ़त में पड़े थे एशिया योरप ।
आज सुखकी हवा आई मुबारक हो मुबारक हो ३ ॥
मुबारक आज का दिन है खुशी क्योंकर न होवें हम ।
तार नुसरत का आया है मुबारक हो मुबारक हो ४ ॥
खुशी का बज रहा है आज नक्कारा ज़माने में ।
गली कूंचे में घर घर में मुबारक हो मुबारक हो ५ ॥
मिस्टर उल्मा लतीफी भी शहर में कहते जाते हैं ।
हुई है जीत बृटिश की मुबारक हो मुबारक हो ६ ॥
चढ़ा है औज पर बेशक सितारा जार्ज पंजम का ।
हुवे मग़लूब सब दुशमन मुबारक हो मुबारक हो ७ ॥
सुलह नामे पे भी चुपके से सिगनेचर किये सबने ।
आस्टरिया ने जर्मन और टर्की ने मुबारक हो ८ ॥

---

१ जीत

करम बलवान दुनिया में किसी की कुछ नहीं चलती ।
उदू सब हो गए क़ायल मुबारक हो मुबारक हो ९ ॥
ज़ुल्म से सीनाजोरी से कोई चाहे जो कुछ करले ।
विजय आखिर धरम की है मुबारक हो मुबारक हो १० ॥
यूनियन जैक ने अपना किया है आज सर ऊंचा ।
बंधा सेहरा विजय का जार्ज पंजुम के मुबारक हो ११ ॥
प्रेजीडेंट विल्सन सा सुलहकुन हो तो ऐसा हो ।
मिटा दिया खदशा एकदम मुबारक हो मुबारक हो १२ ॥
हिन्द के भी जवां मरदों ने ऐसे हाथ दिखलाए ।
किया लाचार जर्मन को मुबारक हो मुबारक हो १३ ॥
हिन्द के जाट सिख मुस्लिम गए मैदान में जिस दम ।
उसी दम हो गई नुसरत मुबारक हो मुबारक हो । १४
बदी का और नेकी का नतीजा देखिये न्यामत ।
विजय आखिर हुई अपनी मुबारक हो मुबारक हो १५

२८

यह भजन सुपुत्र राजकुमार ने बनाया था ॥

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

एक दिन एक राजवंशी था गया वहेर शिकार ।
प्यास से लाचार हो करने लगा ऐसे विचार १ ॥
क्या करूं पानी कहीं मुझको नज़र आता नहीं ॥
प्यास मुझको लग रही बोला ज़रा जाता नहीं २ ॥

---

१ बैरी २ जीत

कोई दरिया नहर कुवां भी नज़र आता नहीं ॥
गर करूं तो क्या करूं पानी कहीं पाता नहीं ॥ ३ ॥
जां लबों पर आ रही है शहर से भी दूर हूं ॥
प्यास से लाचार हूं चलने से चकनाचूर हूं ॥ ४ ॥
हो गया जब इस तरह लाचार पानी के लिये ।
तब पढ़ा नवकार मन्तर उसने पानी के लिये ॥ ५ ॥
बस उसी दम आ गया इक देवता उसके लिये ।
दे गया उसको उसी दम पानी पीने के लिये ॥ ६ ॥
याद रखो हर घड़ी हर दम सदा नवकार को ।
हो गया है इसका निश्चय आज राजकुमार को ॥ ७ ॥

२९

यह भजन प्रिय सूरजभान जैन (लाला जुगलकिशोर जैन रईस हिसार के पौत्र और लाला कूड़मल के पुत्र) के ब्याह के समय बनाया था जो उसने अपनी, सुसराल (नजीबाबाद) में पढ़ा था—बरात जेठ के महीने में लाला विमलप्रसाद जैन रईस नजीबाबाद के यहां गई थी-यह भजन ता० २८ अप्रिल सन् १९२३ को घुड़चढ़ी के समय सूरजभान की प्रार्थना पर बनाया गया था ।

(चाल) सब पड़ जाएगा एक दिन बुलबुले नाशाद का ।

है मुबारक आज का दिन क्या बहार आई हुई ॥
हर तरफ़ है शादमानी की घटा छाई हुई ॥ १ ॥
क्यों नजीबाबाद नज़रों में हुवा जन्नत निशां ॥
हां विमलप्रसाद के घर है बरात आई हुई ॥ २ ॥
आज से इसको अजीबाबाद कहना चाहिये ॥

देखलो है जेठ में सावन वहार आई हुई ॥ ३ ॥
देखकर महमां नवाज़ी और महोव्वत आपकी ।
सबके सब ममनून हैं दिलमें खुशी छाई हुई ॥ ४ ॥
मुद्दतों से थी तमन्ना सबको बस जिस बात की ॥
धन्य है जो आज वह उम्मीद बर आई हुई ॥ ५ ॥
अब विदा होते हैं हम रखना इनायत की नज़र ।
मुआफ़ करना गर इधर से कोई कोताई हुई ॥ ६ ॥
फिर कभी भी इस तरह आकर मिलेंगे आप से ॥
आपकी जानिब से गर और इज्जत अफ़ज़ाई हुई ॥ ७ ॥
न्यायमत धनबाद श्री जिनराज का जिन धर्म का ॥
है जो शादी की खुशी दोनों तरफ़ छाई हुई ॥ ८ ॥

३०

यह भजन डाक्टर नारायणसिंह साहब की प्रेरणा से बनाया था ॥ इसमें श्रीरामचन्द्रजी महाराज के गुणों का वर्णन है। डाक्टर साहब बड़े सज्जन पुरुष हैं और मेरे परम मित्र हैं।

(चाल) फैला हुआ है सारे दुनिया में दान तेरा ।

है रामनाम प्यारा प्यारा जमाल तेरा ।
आखों में छा रहा है सबके जलाल तेरा ।
बलिहारी तेरी शौकत बलिहारी तेरी हिम्मत ।
हर एक काम जगमें है बे मिशाल तेरा ॥ २ ॥
ऋषियों का दुख हटाया क्षत्री धरम दिखाया ।
दिलमें समा रहा है हरदम खयाल तेरा ॥ ३ ॥

मनमोहनी सी सूरत पुरनूर तेरी मूरत।
भुजबल असीम तेरा मस्तक विशाल तेरा ॥ ४ ॥
लछमन के हो बिरादर गम्भीरता के सागर।
दुनिया में नहीं कोई दूजा मिसाल तेरा ॥ ५ ॥
लीलाका तेरी मेला मशहूर रामलीला ॥
होता है हर जगह पर हर एक साल तेरा ॥ ६ ॥
इस दास नरायण के दिल में है याद तेरी।
दिन रात ध्यान तेरा हरदम खयाल तेरा ॥ ७ ॥
यूं धर्म युद्ध करके कर्मों को फेर हर के।
जा मोक्ष में बिराजे यह है कमाल तेरा ॥ ८ ॥

३१

नोट—जर्मन पर शहनशाह जार्ज पंजम की विजय होने पर कन्या पाठशाला हिसार में जलसा हुवा था॥ उस समय यह भजन सुपुत्री कलावती देवी के लिये बनाया था और उसने यह भजन जलसे में पढ़कर सुनाया था।

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं।

जार्ज पंजम की बिजय की है सदा आने लगी।
सुलह की चारों तरफ से अब निदा आने लगी ॥ १ ॥
जीत बिर्टिश की हुई आनन्द जग में छा गया ॥
जैसे आ सावन की लोरें बूंद बरसाने लगी ॥ २ ॥
यूनियन ऊंचा हुआ है यानी बिर्टिश की ध्वजा ॥
हर शहर पर्वत समंदर पार लहराने लगी ॥ ३ ॥

वर्ष गुज़रे पांच पूरे जर्मनी के जंग में ॥
आज रण पूरा हुवा ठंडी हवा आने लगी ॥ ४ ॥
मान जर्मन का घटा इक़बाल ब्रिटिश का बढ़ा ॥
हिन्द में भी बुलबुलें शुभ के गीत गाने लगीं ॥ ५ ॥
वाह हैं कैसे बहादुर सारे हरयाने के जाट !
डर गया जर्मन जो जाटों की फौज जाने लगी ॥ ६ ॥
आज कन्या पाठशाला में खुशी क्योंकर न हो।
न्यायमत जब हर तरफ़ सुखकी घटा छाने लगी ॥ ७ ॥

---:0:---

६—स्त्रियों के उपयोगी भजन।

---:0:---

३२

नोट—ता० २१ दिसम्बर सन् १९२३ को यह भजन सुपुत्री सितारा देवी के लिये उसके इम्तिहान के समय बनाया था।

(चाल) हम भी अपने राम की उलफ़त में सीता बन गए।

बहनो मूरखताई से तुम आप दुखियारों में हो।
बनके विद्या हीन और मत हीन नाकारों में हो ॥ १ ॥
हो चुकी सीता दरोपद केकई सी हिंद में।
है बड़ा अफ़सोस तुम अज्ञान लाचारों में हो ॥ २ ॥
चर्णरज तुमको पुकारें पाओं की जूती कहें।
बस अविद्या से सखी तुम सब शरमसारों में हो ॥ ३ ॥

लक्ष्मी देवी सती तुमको कहैं विद्या पढो।
तुम जगत की लाज हो और घर के शृंगारों में हो ॥ ४ ॥
है यही उपदेश न्यामत का ज़रा बहनों सुनो।
रात दिन विद्या पढ़ो पढ़ करके होशियारों में हो ॥ ५ ॥

३३

यह भजन सुपुत्री कलावती के कहने पर हिसार में बनाया गया था और उसने तीजों के दिन अपनी सहेलियों के साथ मिलकर गाया था।

चाल--अम्मा मुझे दिल्ली की टोपी मंगा दे।

अम्मा मुझे रेशम का झूला गिरा दे।
झूला गिरा दे हंडोला गड़ा दे।
मोतिया चंबेली के हार बनवा दे ॥ टेक ॥
टीका लगादे मेहंदी रचादे ॥
हाथों में नई नई चुरियां पहनादे ॥ १ ॥
रेशम की साड़ी धानी रंगादे ॥
कसूंबी सुनेहरी मलागीरी रंगादे ॥ २ ॥
लाल आसमानी काफूरी रंगादे ॥
बसन्ती गुलाबी गुलेनारी रंगादे ॥ ३ ॥
गोटा लगादे किनारी लगादे ॥
ओ रे धो रे सलमे सितारे टकादे ॥ ४ ॥
रेशम का फीता बेल लगवादे ॥
बिच चांदी सोने तार खचवादे ॥ ५ ॥

खाने को फल फूल घेवर मंगादे ॥
हांरी पूड़े मीठे सलोने बनादे ॥ ६ ॥
मंदिरमें सब मिलके पूजा करेंगी ॥
पूजा की सारी सामग्री मंगादे ॥ ७ ॥
भय्या को माता जी सोनीपत भेजदे ॥
बीवी केवली को बुलादे मिलादे ॥ ८ ॥
दिल्ली में जैसा शहादरेका मेला ॥
यहां भी वैसा तीजोंका मेला करादे ॥ ९ ॥
भाई भतीजों को लेकर के झूलूं ॥
लामेरी गोदी में सारे बिठादे ॥ १० ॥
छोटी छोटी बुंदियां ठंडी पवनिया ॥
हांरी बाग़ चम्पा में झूला गिरादे ॥ ११ ॥
झूलेंगे गाएंगे मिल करके सारी ॥
भजनों की नई नई पुस्तक मंगादे ॥ १२ ॥
कन्या सुशिक्षित हों विद्याकी वृद्धि ।
मुझ लो ऐसे तीजों के गीत बनवादे ॥ २३ ॥
विद्या पढेंगी सुशीला बनेंगी ॥
हमारे लिये कन्या पाठशाला खुलादे ॥ १४ ॥
न्यामत वही है चतुर और सुशीला ॥
धर्म में जो पढ़करके जीया लगादे ॥ १५ ॥

३४

यह भजन सुपुत्री सितारा देवी के लिये तारीख १९ जनवरी सन् १९२४ को बनाया था जब कि एक मेम साहिबाने गर्लस्कूल हिसार में स्वास्थ्य रक्षा पर लेकचर दिया था॥

चाल—फैला हुवाहै सारे दुनिया में ज्ञान तेरा॥

अय मेरी प्यारी बहनो बिगड़ी दशा संवारो॥
अपनी सेहत का हरदम दिल में ख़याल धारो॥ १॥
मरते हैं लाखों बच्चे माता की ग़फ़लतों से॥
ग़फ़लत की नींद त्यागो आखें ज़रा उघारो॥ २॥
दांतों को साफ रक्खो नाखून साफ रक्खो
बसतर भी साफ़ रक्खो नित जल से तन पखारो॥ ३॥
नीयत समय पे खावो नीयत समय पे सोवो॥
सूरज उदय से पहले उठ नींद को निवारो॥ ४॥
सब शास्तर किताबें बतला रहे हैं हमको
अपनी सेहत की खातिर धन माल सब निसारो॥ ५॥
विद्या से देवियों में सतियों में नाम होगा।
बन करके द्रोपदी सी घर बार को संभारो॥ ६॥
रामायण और यादव कुल का पुराण पढकर॥
सीता के रुकमणी के चारित्र को बिचारो॥ ७॥
जेवर का बहनो हरगिज़ कुछ न ख़याल करना।
विद्या हमारा भूषण विद्या से तन शृंगारो॥ ८॥
है एक तंदुरुस्ती न्यामत हज़ार जानो॥
रक्षा का इसके हरदम दिल में खयाल धारो॥ ९॥

३५

व्याकरण हिन्दी भाषाके आठ कारकों को दिखाने वाले दोहे। यह दोहे सुपुत्री सितारा देवी के लिये ता० २९ दिसम्बर सन् १९२३ को बनाए थे जब कि पांचवीं कक्षा की परीक्षा होने वाली थी॥

(दोहा)

आज बनाया हाथसे मैने सुंदर हार।
तेरे कारण हे सखी देखो आंख पसार॥ १॥
लाई अपने बाग़ से चुन चुन कली संवार॥
ला तेरे गल में डारदूं मेरा सुंदर हार॥ २॥

३६

दिसम्बर सन् १९२३ में यह भजन सुपुत्री सितारा देवी के लिये बनाया था--कन्या पाठशाला हिसार में दिल्ली दर्बार की छुट्टी हुई थी और उस समय यह भजन सब लड़कियां ने पढ़कर सुनाया था।

चाल--

आओ बहनों खेलें कूदें मौक़ा खेल रचाने का॥
दिल्ली में दरबार हुवा था दिन है खुशी मनाने का॥ १॥
सारी मिलकर गाएं बधाई समय है गीत सुनाने का॥
फेर मदरसे में छुट्टी हो हुकम मिले घर जाने का॥ २॥
आहा आहा, ओहो ओहा, हुररा है, फिर हुररा है॥
मौक़ा आज मिला है न्यामत खासा शोर मचाने का॥३॥

३७

नोट-सुपुत्री सितारा देवी के लिये यह भजन ता० २५ दिसम्बर सन १९२३ को बनाया था इसमें चर्खे के सब पुर्जों का हाल दिखलाया गया है और छोटे बच्चों के लिये बड़ा उपयोगी है ।

नोट--भारत की पुरानी कलों और उनके पुर्जों के सही नाम याद करने के लिये इस प्रकार के भजन बच्चों को अज़बर याद कराने चाहियें—विद्वानों को चाहिये कि अन्य पुरानी कलों के (चक्की—चर्खी रुई लोढने की कोल्हू आदि) भी इस प्रकार के भजन बनाकर बच्चों को याद करावें ।

चल मेरा चर्खा चरखचूं—ढीला ढाला बैठा क्यूं ॥ १ ॥
तीनों खूंटे अगली सीम—खड़े युधिष्टर अर्जुन भीम ॥२॥
पिछले खूंटे अपनी धाम—जैसे गिरधारी बलराम ॥३॥
चर्खे के देखो दो चाक—पंखड़ी नारंगी की फांक ॥४॥
भवन लगा चाकों के बीच—फिरकी दो खूंटों के बीच ५॥
जंदनी का पूरा है जाल—ला तेरे गलमें डारूं माल ६ ॥
देखो चरमुख दोनों नार—करमें तकला लिया संभार ७ ॥
नली दमखड़ा दीना डाल—तकले का बल दिया निकाल ।८।
चर्खा बैठा पटड़ी साज—ज्यूं बैठे दिल्ली का राज । ९ ।
बेलन को दूं चक्कर चार—पूनी में से निकले तार । १० ।
तार चढ़े तकले पर सार—कुकड़ी हो जावे तय्यार । ११ ।
ऐसा कातूं सुंदर सूत—देखें सब मेरा करतूत । १२ ।
वाहरे चर्खा तेरी चाल—भारत को कर दिया निहाल ।१३।
न्यामत चर्खा है हितकार—करता है सबका उपकार । १४ ।

३८

चाल—माधो घनश्याम को मैं ढूंढन चली री।

अपने धरम की मैं विद्या पढ़ूंगी ॥
विद्या पढूंगी सुशिक्षित वनूंगी ॥ टेक ॥
क्या धन दौलत वस्त्र भूषण और क्या ऊंचे मंदिर ॥
विद्या हीन पशु सम नारी चाहे वनी हो सुंदर ॥
मैंतो–विद्या का ही शृंगार करूंगी ॥ १ ॥
विद्या पढ़कर पंडित वनकर धर्म उपदेश सुनाऊं ॥
जो मेरी वहने मूरख हैं सवको सुधी वनाऊं।
न्यामत-विद्या का जा परचार करूंगी ॥ २ ॥

३९

चाल-सखी सावन वहार आई झुलाए जिनका जी चाहे।

घड़ी मेरी सखी है जो समय मुझको वताती है।
वक्त पर पहोंच जाने की मुझे शिक्षा सुनाती है ॥ १ ॥
खेल में कूदमें मैं भूल जाती हूं जो काम अपना।
तो टिक टिक शब्द करके यह घड़ी घंटी वजाती है ॥ २ ॥
वक्त पर काम करना सीख लो पर्माद को त्यागो।
कहे न्यामत सुना वहनो घड़ी तुमको जिताती है ॥ ३ ॥

४०

चाल—हो बहनो चर्खे पे दारोमदार है ।

हो बहनो विद्या बड़ी हितकार है ।
हां विद्या करती बड़ा उपकार है ॥ १ ॥
विद्या बिना गहना भी सब बेकार है ।
हां विद्या सांचा हमारा शृंगार है । २ ।
बहनो विद्या सब दुख निवारणहार है ॥
हां विद्या सुख मंगल कर्तार है ॥ ३ ॥
हो बहनो विद्या पे दारोमदार है ।
हां विद्या सीखो तो बेड़ा पार है । ४ ।
बहनो जग में विद्या ही धनसार है ।
हां याको लेवे ना चोर चकार है । ५ ।
बहनो विद्या उन्नति का आधार है ।
हां विद्या बिना दुखी संसार है । ६ ।
न्यामत विद्या से होता सत्कार है ॥
हां विद्या भवदधि तारनहार है । ७ ।

———:o:———

इति जैन भजन तरंगनी समाप्तम्

शुभम्

पवित्र दंत मंजन ।

१—यह पवित्र दंत मंजन मैंने हिसार के श्रीमान पंडित श्रीदत्तजी वैद्य से अपने लिये बनवाया था—क्योंकि मेरे दांतों में हर समय चीस रहती थी और कभी कभी मसूढ़े फूल जाते थे—सो इसके लगाने से अब मुझे बिल्कुल आराम है और सदैव प्रातःकाल इस पवित्र मंजन का नियम पूर्वक इस्तेमाल करता रहता हूं

२—यह पवित्र दंत मंजन दांतों की हर प्रकार की बीमारियों को फायदा करता है—प्रत्येक स्त्री पुरुष और आठ वर्ष के बच्चे को प्रातःकाल नहाते समय अपने दांतों को इस पवित्र दंत मंजन से साफ़ करने चाहियें। जिससे सदैव दांत साफ़ और मज़बूत रहते हैं और मुंह की रतूबत व बदबू भी दूर हो जाती है।

३—यह पवित्र दंत मंजन जंगल की जड़ी बूटियों से बनाया गया है इसमें किसी प्रकार की खड़िया आदि मिट्टी भी नहीं है विलायती दंत मंजन आदि जो प्रायः बाजारों में तड़क भड़क की शीशियों में बिकता देखते हैं जो हमारे लिये महा अशुद्ध और हानिकारक हैं—प्रायः उन सब दंत मंजनों से यह पवित्र दंत मंजन शुद्ध है फायदा देनेवाला है और स्वादिष्ट है।

४—इस पवित्र दंत मंजन को जो बारीक पिसा हुआ है हाथ की उंगली (बुरुश से भी इस्तेमाल कर सकते

हैं) से करें। जो भाई नीम व कीकर आदि की दांतन करते हैं वह दांतन के साथ इस पवित्र दंत मंजन को लगावें ॥

नोट—यह पवित्र दन्त मंजन सब भाइयों को एक दफा मंगाकर आज़माना चाहिये क्योंकि दाँतों से ही मनुष्य की जिंदगी है—इसका मूल्य भी प्रायः लागत मात्र प्रति पेकेट ॥) है जो दो महीने के लिये एक पेकेट काफी है।

हितैषी—रघुबीरसिंह जैन हिसार

———:o:———

स्वादिष्ट पाचक चूरण।

१—यह चूर्ण भी खाने में बड़ा मज़ेदार है—खाना खाने के बाद ज़रा सा खालो तो सब खाना हजम हो जाता है—जिसको बदहज़मी रहती हो—पेट में उफारा रहता हो और खट्टी डकारें आती हों जरा सा खाने से सब बीमारी दूर हो जाती हैं और मुंह का ज़ायक़ा बहुत अच्छा हो जाता है।

२—यह चूरण भी एक वैद्यजी से तय्यार कराया गया है जिसमें सब जंगल की जड़ी बूटी आदि साफ करके डाली गई हैं—मूल्य प्रायः लागत मात्र प्रति पेकेट ॥) है

नोट—उपरोक्त पवित्र दन्त मंजन व स्वादिष्ट पाचक चूरण वी० पी० द्वारा रवाना किये जाते हैं डाक खर्च सब खरीदार के जिम्मे होगा।

मंगाने का पताः—

रघुबीरसिंह राजकुमार जैन

Distt. HISSAR (Punjab) मु० हिसार (पंजाब)

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छंद बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पण्डितोंने रचे थे जिनको अब संशोधन करके मोटे कागज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयों को पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषों के लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर है ॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढ़ने योग्यहैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित बनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चारित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। मूल्य १)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धन कुमार जी का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। मूल्य ॥=)

(३) नमोकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा कागज़ =)

पुस्तक मिलनेका पताः—

रघुबीर सिंह जैन मैनेजर

न्यामत जैन पुस्तकालय हिसार

Hisar (Punjab) मु० हिसार (पंजाब)